वर्तमान व्यावसायिक मूल्य लगभग 1000 करोड़ है। राज्य की इतनी विशाल पशुधन जनसंख्या के चारे की आवश्यकता वनों तथा उच्च पर्वतीय चरागाहों में चराकर पूरी की जाती है। यह अनुमान किया गया है कि प्रत्येक वर्ष प्रदेश में लगभग 92 लाख मीट्रिक टन चारा, जिसका व्यावसायिक मूल्य लगभग 1000 करोड़ रूपये की खपत होती है। इन्ही कारणों से चारे को एक महत्वपूर्ण गैर काष्ठ वन उत्पाद माना जाता है। बिरोज़ा एक अन्य गैर काष्ठ वन उत्पाद है। सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से बिरोज़ा निसारण कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे न केवल प्रदेश के राजकोष को लगभग 50 करोड़ रूपए प्रतिवर्ष आय होती है बल्कि हजारों लोगों को नगद मज़दूरी भी मिलती है।

गैर काष्ठ वन उत्पाद पर पारम्परिक निर्भरता के दृष्टिगत, राज्य के स्थानीय लोगों को वनों से इन उत्पादों को बिना किसी कीमत अदायगी के एकत्रित करने का अधिकार प्रदान किया गया है, बशर्ते वे इन स्रोतों के संरक्षण को ध्यान में रखें।

हिमाचल में गैर काष्ठ वन उत्पादों के महत्त्व का अंदाज़ा इस तथ्य से ही लगाया जा सकता है कि स्थानीय लोगों द्वारा राज्य के वनों से प्रतिवर्ष 2500 करोड़ रुपये से अधिक के गैर काष्ठ वन उत्पादों का दोहन किया जाता है।

लेखन व चित्र : डॉ. जी.एस. गोराया
लेआउट व डिज़ाइन : सतीश गुप्ता
प्रचार वन मंडल-शिमला
Ptd. by: NEW ERA Ph.: 0177-2628276

हिमाचल प्रदेश की गैर काष्ठ वन उत्पाद सम्पदा

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

उत्तर-पश्चिमी हिमालय के आँचल में बसे पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्र हैं। यहाँ पंजाब हरियाणा की सीमा के साथ लगते उप-ऊष्ण कटिबंध, मध्य हिमालय में शितोष्ण कटिबंध और आंतरिक हिमालय में उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में गैर काष्ठ वन उत्पाद सम्पदा की अद्वितीय विविधता व भंडार है। कुल 68.56 लाख जनसंख्या का लगभग 90 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। दुर्गम क्षेत्रों में स्थित ग्रामीण अपनी विभिन्न घरेलू

आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु स्थानीय स्तर पर उपलब्ध साधनों पर ही निर्भर हैं। राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का दो तिहाई भाग वनों के अन्तर्गत आता है। अत: वन तथा इनमें मौजूद जैव-विविधता ही इन ग्रामीण क्षेत्रों की घरेलू आवश्यकतापूर्ति का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।

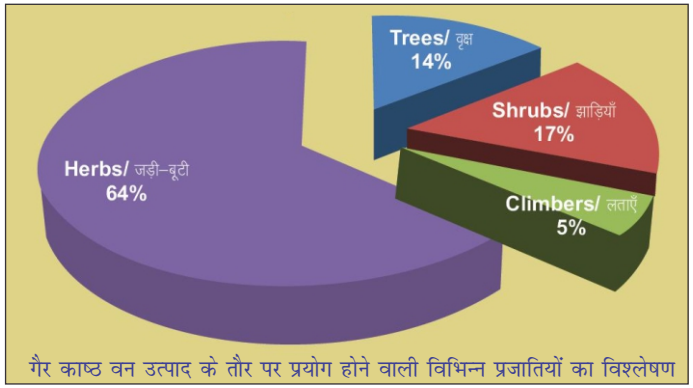

गैर काष्ठ वन उत्पाद के तौर पर प्रयोग होने वाली विभिन्न प्रजातियों का विश्लेषण

इमारती लकड़ी को नि:संदेह राज्य के वनों से प्राप्त होने वाला, सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व उपयोगी वन उत्पाद माना जाता है। इमारती लकड़ी प्रदान करने वाली प्रजातियों के विषय में जानकारी के साथ-साथ, स्थानीय लोगों के पास ईंधन, चारा,

भोजन, रेशा, टोकरी-निर्माण, कृषि-संबंधी औज़ार, प्राथमिक उपचार, धार्मिक उत्सव, रीति-रिवाज़ आदि के लिए प्रयोग होने वाली लगभग 1500 पौध-प्रजातियों सम्बन्धी प्रशंसनीय व अतुलनीय जानकारी है। राज्य में गैर काष्ठ वन उत्पाद के तौर पर प्रयोग होने वाली विभिन्न प्रजातियों का विश्लेषण दिये गये रेखा-चित्र में दर्शाया गया है।

यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर गैर काष्ठ वन उत्पादों का लगभग 33% भाग जड़ी-बूटियाँ हैं परन्तु यह तथ्य अचंभित करने वाला है कि राज्य में जड़ी-बूटियों का यह अनुपात 64% है। गैर काष्ठ वन उत्पाद के रूप में उपयोग की जाने वाली जड़ी-बूटियों के इतने बड़े अनुपात (64%) का श्रेय राज्य के विशाल हिमालय क्षेत्रों में मौजूद असंख्य जड़ी-बूटियों की विविधता को ही जाता है।

स्थानीय स्तर पर उपलब्ध गैर काष्ठ वन उत्पादों की विविधता का राज्य के सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक जीवन में बहुत महत्त्व है। गैर काष्ठ वन उत्पाद को वनों से इकट्ठा कर के उनका विक्रय राज्य के हज़ारों ग्रामीण लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन है। एक अध्ययन के अनुसार ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क की परिधि में बसे प्रत्येक घर की औसत आय लगभग 14,000 रुपये है। कुछ गरीब ग्रामीण परिवारों के लिए औषधीय पौधों का एकत्रण व उनका व्यापार, उनकी नगद आय का एकमात्र स्रोत है।

हिमाचल प्रदेश में घरेलू ईंधन का पारम्परिक मुख्य स्रोत बालन है। प्रदेश में बालन की प्रति व्यक्ति वार्षिक खपत दर लगभग 7.46 क्विंटल है। ऐसा अनुमान है कि प्रत्येक वर्ष राज्य के वनों से 27.60 लाख मीट्रिक टन बालन स्थानीय वासियों द्वारा नि:शुल्क निकाला जाता है, जिसका